खरमास में ऐसे करें तुलसी पूजा, बनी रहेगी खुशहाली

खरमास का आरंभ 15 दिसंबर से हो चुका है। शास्त्रों में वर्णित जानकारी के अनुसार, खरमास के दौरान मांगलिक कार्यों पर रोक लग जाती है। साथ ही, पूजा-पाठ से जुड़े नियमों का भी मुख्य रूप से पालन करना पड़ता है नहीं तो ग्रह दोष लगता है और जीवन में संकट आने शुरू हो जाते हैं। इसी कड़ी में पूजा-पाठ के कुछ नियम जुड़े हैं तुलसी पूजन से।

खरमास में कैसे करें तुलसी की पूजा?

धर्म ग्रंथों और शास्त्रों में बताया गया है कि खरमास में तुलसी पूजा नहीं करनी चाहिए क्योंकि तुलसी को खरमास के दौरान स्पर्श करना वर्जित माना गया है और बिना स्पर्श किये तुलसी पूजा करना संभव नहीं है, लेकिन शास्त्रों में यह भी उल्लेखित है कि अगर किसी के घर में कोई अनुष्ठान चल रहा है जिसके लिए तुलसी पूजन आवश्यक है तो तब तुलसी माता की पूजा कैसे करें।

- एक तांबे का बर्तन लें। तांबे का बर्तन संभव न हो तो पीतल का भी ले सकते हैं। इसके बाद बर्तन में तुलसी को बिना छुए उसके गमले में से थोड़ी सी मिट्टी निकाल लें।
- फिर मिट्टी से छोटी सी प्रतिमा बनाकर, जैसी आप बना पाएं वैसी ही, उस पर गंगाजल और दूध डालें। इसके बाद गंगाजल और दूध से उस मिट्टी को आटे की तरह मथ लें और उस पर हल्दी की 5 गांठें रख दें।
- इसके बाद उसी मथी हुई मिट्टी को सूती लाल रंग के कपड़े में लपेटकर उस पर कलावा 3 बार लपेटें और फिर उस पोटली को घर की पूर्व दिशा में बांध दें। इसके बाद तुलसी के पौधे के सामने खड़े होकर तुलसी चालीस का पाठ करें। तुलसी स्तोत्र पढ़ें और अपने हवन-अनुष्ठान आदि को संपन्न करें। ध्यान रहे कि भोग निकलते समय तुलसी माता के हिस्से का भोग गाय को खिलाएं।

खरमास का महत्व एवं पौराणिक कथा

भारतीय पंचांग के अनुसार जब सूर्य धनु राशि में संक्रांति करते हैं तो यह समय शुभ नहीं माना जाता है। प्रतिवर्ष की तरह इस बार भी सूर्यदेव 15 दिसंबर को अपनी राशि बदल रहे हैं। इस बार गुरुवार को सूर्य धनु राशि में प्रवेश करेंगे। इसे ही सूर्य धनु संक्रांति कहा जाता है। धार्मिक मान्यतानुसार जब तक सूर्य मकर राशि में संक्रमित नहीं होते तब तक किसी भी प्रकार के शुभ कार्य नहीं किए जाते हैं। सूर्य किसी विशेष राशि में प्रवेश करता है, इसी कारण से इसे संक्रांति के नाम से जाना जाता है। धनु संक्रांति के दिन भगवान सत्यनारायण की कथा का पाठ किया जाता है। इस दिन भगवान को मीठे व्यंजनों का भोग लगाया जाता है।

भगवान विष्णु की पूजा में केले के पत्ते, फल, सुपारी, पंचामृत, तुलसी, मेवा आदि का भोग तैयार किया जाता है। सत्यनारायण की कथा के बाद देवी लक्ष्मी, महादेव और ब्रह्मा जी की आरती की जाती है और चरणामृत का प्रसाद दिया जाता है।

जो लोग विधिपूर्वक पूजन करते हैं उनके सभी संकट दूर होते हैं और मनोकामनाओं की पूर्ति होती है। पंचांग के अनुसार यह समय पौष मास का होता है, जिसे खरमास कहा जाता है। इस माह की संक्रांति के दिन गंगा-यमुना स्नान का महत्व माना जाता है। पौष संक्रांति के दिन श्रद्धालु नदी किनारे जाकर सूर्य को अर्घ्य देते हैं। इससे स्वयं के मन की शुद्धि होती है। बुद्धि और विवेक की प्राप्ति के लिए भी इस दिन सूर्य पूजन किया जाता है।

खरमास का समापन कब होगा?

सूर्य देव लगभग एक महीने तक धनु राशि में रहते हैं, जिसके कारण खरमास भी एक महीने का होता है। जब सूर्य देव धनु राशि से निकलकर मकर राशि में प्रवेश करते हैं, तो खरमास समाप्त हो जाता है। 14 जनवरी, 2025 को मंगलवार को सूर्य देव मकर राशि में प्रवेश करेंगे, जिस दिन खरमास खत्म होगा और मकर संक्रांति मनाई जाएगी। इसके बाद से मांगलिक कार्य फिर से शुरू हो सकेंगे।

खरमास के दौरान सूर्यदेव की पूजा का महत्व

खरमास के दौरान सूर्य देव की पूजा का विशेष महत्व है। बता दें, सूर्यदेव को ऊर्जा का देवता माना जाता है। उनकी पूजा करने से शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और रोगों से मुक्ति मिलती है। सूर्य देव की पूजा करने से व्यक्ति के जीवन में समृद्धि आती है। सूर्यदेव को तांबे के लोटे में जल भरकर अर्घ्य देना चाहिए। आपको बता दें, खरमास के दौरान सूर्यदेव कमजोर हो जाते हैं। जिसके कारण शुभ कार्यों पर रोक लगा दी जाती है। इसलिए इस दौरान उनकी पूजा विधिवत रूप से करें।

खरमास के दौरान किन मंत्रों का जाप करें?

खरमास के दौरान इ मंत्रों का विशेष रूप से जाप करें। इससे व्यक्ति को उत्तम परिणाम मिल सकते हैं।

ऊं घृणि सूर्याय नमः
ऊं सूर्याय नमः
ऊं ह्रीं ह्रीं सूर्याय सहस्रकिरणराय मनोवांछित फलम् देहि देहि स्वाहा-
ऊं नमो भगवते वासुदेवाय-

खरमास की कथा

संस्कृत में गधे को खर कहा जाता है। पौराणिक ग्रंथों में वर्णित खरमास की कथा के अनुसार भगवान सूर्यदेव सात घोड़ों के रथ पर सवार होकर लगातार ब्रह्मांड की परिक्रमा करते रहते हैं। उन्हें कहीं पर भी रूकने की इजाजत नहीं है। मान्यता के अनुसार उनके रूकते ही जन-जीवन भी ठहर जाएगा। लेकिन जो घोड़े उनके रथ में जुड़े होते हैं वे लगातार चलने और विश्राम न मिलने के कारण भूख-प्यास से बहुत थक जाते हैं। उनकी इस दयनीय दशा को देखकर सूर्यदेव का मन भी द्रवित हो गया। वे उन्हें एक तालाब के किनारे ले गए, लेकिन उन्हें तभी यह ध्यान आया कि अगर रथ रूका तो अनर्थ हो जाएगा। लेकिन घोड़ों का सौभाग्य कहिए कि तालाब के किनारे दो खर मौजूद थे। भगवान सूर्यदेव घोड़ों को पानी पीने और विश्राम देने के लिए छोड़े देते हैं और खर अर्थात गधों को अपने रथ में जोत देते हैं। अब घोड़ा-घोड़ा होता है और गधा-गधा, रथ की गति धीमी हो जाती है फिर भी जैसे-तैसे एक मास का चक्र पूरा होता है तब तक घोड़ों को विश्राम भी मिल चुका होता है, इस तरह यह क्रम चलता रहता है और हर सौर वर्ष में एक सौर खर मास कहलाता है।

शास्त्रों के अनुसार, जहां एक ओर खरमास में मांगलिक कार्यों पर रोक लग जाती है तो वहीं, दूसरी ओर इस दौरान पूजा-पाठ करना बहुत शुभ माना जाता है। इसी कड़ी में शास्त्रों में कुछ ग्रंथों को खरमास में पढ़ना अत्यधिक लाभकारी माना जाता है।

सुख-शांति के लिए खरमास में करें इन ग्रंथों का पाठ

खरमास में भगवद गीता का पाठ

खरमास में भगवद गीता का पाठ करने से आत्मा की शुद्धि होती है और व्यक्ति को आध्यात्मिक उन्नति मिलती है। गीता के श्लोकों का जाप और चिंतन करने से व्यक्ति के मन, शरीर और आत्मा में शांति और संतुलन आता है। जीवन के पथ को लेकर दिशा समझ आने लगती है और पारिवारिक क्लेश दूर होता है।

खरमास में रामायण का पाठ

रामायण का पाठ घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। रामायण का खरमास में पाठ करने से नकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह कम होता है और भगवान राम का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। इसके अलावा, रामायण का खरमास में पाठ करने से व्यक्ति को शत्रुओं पर विजय मिलती है। षड्यंत्र से रक्षा होती है।

खरमास में शिव पुराण का पाठ

खरमास में शिव पुराण का पाठ करने से भगवान शिव की विशेष कृपा प्राप्त होती है। ऐसा माना जाता है कि भगवान शिव स्वयं भक्त के सभी संकटों को हर लेते हैं और अपनी कृपा बरसाते हैं। खरमास में शिव पुराण का पाठ करने से आध्यात्मिक बल मिलता है और व्यक्ति में भक्ति का संचार होने लग जाता है।

खरमास में सत्यनारायण कथा का पाठ

सत्यनारायण कथा का पाठ घर में धन, समृद्धि और ऐश्वर्य को आकर्षित करता है। वहीं, खरमास के दौरान इस पाठ को करने से ग्रहों की अशुभता दूर होती है। भगवान सत्यनारायण की पूजा से घर में दरिद्रता समाप्त होती है और आर्थिक स्थिति मजबूत होती है। यह कथा पुण्य प्राप्ति का सबसे सरल स्रोत है।

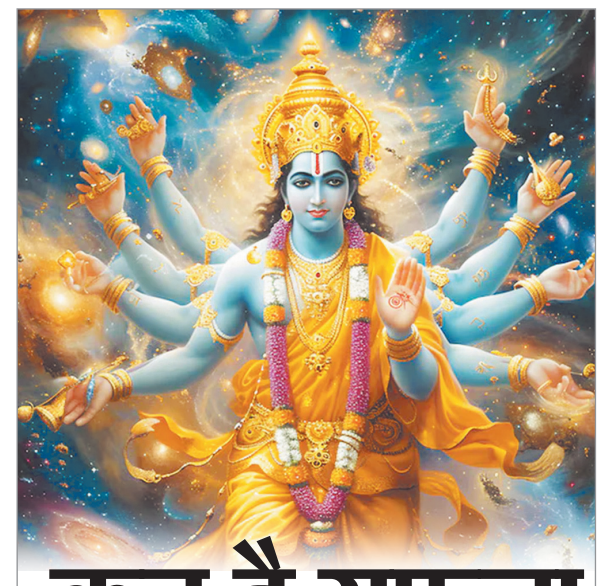

कब है सफला एकादशी

सनातन धर्म में सभी एकादशी तिथियों का विशेष महत्व है। वहीं पंचांग के हिसाब से पौष माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि के दिन सफला एकादशी का व्रत रखा जाता है। साथ ही इसे पौष कृष्ण एकादशी के नाम से भी जाना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि अगर किसी व्यक्ति के जीवन में किसी भी तरह की कोई परेशानी आ रही है, तो सफला एकादशी के दिन पूजा-पाठ करने से व्यक्ति को सफलता की प्राप्ति हो सकती है। साथ ही जीवन में आ रही बाधाएं भी दूर हो सकती है। अब ऐसे में इस साल सफला एकादशी का व्रत कब रखा जाएगा। भगवान विष्णु की पूजा का शुभ मुहूर्त क्या है और पूजा का महत्व क्या है।

सफला एकादशी कब है?

हिंदू पंचाग के अनुसार, इस साल पौष माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि 25 दिसंबर बुधवार को रात 10 बजकर 29 मिनट से शुरू हो रहा है और इस तिथि का समापन 26 दिसंबर को देर रात 12 बजकर 43 मिनट पर होगा। उदयातिथि के आधार पर इस साल की अंतिम एकादशी यानी सफला एकादशी 26 दिसंबर गुरुवार के दिन है।

भगवान विष्णु की पूजा का शुभ मुहूर्त

सफला एकादशी के दिन भगवान विष्णु की पूजा का शुभ मुहूर्त 26 दिसंबर को ब्रह्म मुहूर्त सुबह 05 बजकर 23 मिनट से लेकर सुबह 06 बजकर 17 मिनट तक है।

भगवान विष्णु की पूजा का महत्व

सफला एकादशी के दिन भगवान विष्णु की पूजा-अर्चना करने से व्यक्ति के जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति हो सकती है और अगर किसी जातक के कार्यक्षेत्र में कोई परेशानी आ रही है, तो भगवान विष्णु की पूजा करने से व्यक्ति को उत्तम परिणाम मिल सकते हैं और भाग्योदय हो सकता है और मनोवांछित फलों की भी प्राप्ति होती है।

भगवान विष्णु को लगाएं इन 3 चीजों का भोग

हिंदू धर्म में एकादशी तिथि को महत्वपूर्ण माना गया है। सभी एकादशी तिथि के दिन भगवान विष्णु की पूजा विशेष रूप से करने का विधान है। ऐसा कहा जाता है कि अगर किसी व्यक्ति को बार-बार परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, तो एकादशी के दिन व्रत रखने से उत्तम परिणाम मिल सकते हैं। आपको बता दें, पौष माह में पड़ने वाली एकादशी तिथि को सफला एकादशी के नाम से जाना जाता है। अब ऐसे में इस दिन विष्णु जी को किन चीजों का भोग लगाने से सुख-समृद्धि की प्राप्ति हो सकती है।

भगवान विष्णु को लगाएं केसर हलवा का भोग

सफला एकादशी के दिन भगवान विष्णु को केसर हलवा का भोग लगाएं। केलर हलवा श्रीहरि को बेहद प्रिय है और इसका भोग लगाने से व्यक्ति को मनोवांछित फलों की प्राप्ति हो सकती है और भगवान विष्णु की कृपा भी बनी रहती है। इसके अलावा अगर बार-बार आपके काम अटके रहते हैं, तो इससे शुभ परिणाम मिल सकते हैं।

भगवान विष्णु को लगाएं केले का भोग

सफला एकादशी के दिन भगवान विष्णु को केले का भोग लगाएं। ऐसा कहा जाता है कि केले का भोग लगाने से व्यक्ति को गुरुदोष से छुटकारा मिल सकता है और जीवन में आने वाली बाधाएं दूर हो जाती है। केले का भोग विष्णु जी की कृपा पाने के लिए सबसे आसान तरीका है। ऐसा माना जाता है कि केले के पत्ते पर भगवान विष्णु को भोग लगाने से घर में समृद्धि का वास होता है।

भगवान विष्णु को लगाएं खीर का भोग

सफला एकादशी के दिन भगवान विष्णु को केसर वाली खीर का भोग लगाएं। ऐसा कहा जाता है कि केसर खीर का भोग लगाने से व्यक्ति के शीघ्र विवाह के योग बनने लग जाते हैं और भौतिक सुखों में भी वृद्धि होती है। इसके अलावा अगर आपके वैवाहिक जीवन में कोई समस्या आ रही है, तो केसर खीर का भोग लगाने से उत्तम फलों की प्राप्ति हो सकती है। भगवान विष्णु की कृपा से आयु और स्वास्थ्य में वृद्धि होती है।

पौष मास हो गया है आरंभ जानिए खास बातें

पौष मास का आरंभ हो गया है। पौष का महीना पंचांग के अनुसार दसवां महीना कहलाता है। पौष मास की पूर्णिमा पर चंद्रमा पुष्य नक्षत्र में रहता है। चंद्रमा के पुष्य नक्षत्र में रहने के कारण इस महीने को पौष का महीना कहते हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस महीने में उत्तम स्वास्थ्य और मान-सम्मान की प्राप्ति के लिए भगवान सूर्यनारायण की पूजा का विधान है। इस महीने में भगवान सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है और उपवास भी रखा जाता है।

हिन्दू पंचांग के दसवें महीने को पौष कहते हैं। इस महीने सूर्य 11,000 रश्मियों के साथ व्यक्ति को उर्जा और स्वास्थ्य प्रदान करता है। पौष मास में अगर सूर्य की नियमित उपासना की जाए तो सालभर व्यक्ति स्वस्थ और संपन्न रहता है। पौष मास विवाह चर्चा या विवाह से जुड़े कार्यक्रम करने के लिए शुभ नहीं माना जाता है। इसके अलावा गृह प्रवेश, भूमि पूजन, हवन, ग्रह प्रवेश, व्यापार मुहूर्त, देव पूजन, मुंडन और जनेऊ संस्कार जैसे कार्यों पर भी रोक लग जाती है।

क्या खाएं

- पौष के महीने में खान-पान को लेकर भी काफी सावधानी बरतनी पड़ती है। इस महीने में मेवे और स्निग्ध चीजों का इस्तेमाल करने के लिए कहा जाता है।
- चीनी की बजाय गुड़ का सेवन करें। अजवाइन, लौंग और अदरक का सेवन लाभकारी होता है। गेहूं, चावल और जौ का सेवन करना भी अच्छा होता है।
- पौष के महीने में आपको खाने में सेंधा नमक का इस्तेमाल करना चाहिए। तिल का सेवन करने से भी आपको स्वास्थ्य लाभ मिलता है।

क्या न खाएं

- इस महीने में ठंडे पानी का प्रयोग, स्नान में गड़बड़ी और अत्यधिक खाना खतरनाक हो सकता है। इस महीने में बहुत ज्यादा तेल घी का प्रयोग भी उत्तम नहीं होगा।
- इस महीने में तामसिक भोजन करने से बचना चाहिए। तामसिक भोजन को पचाने के लिए बहुत ज्यादा मेहनत करना पड़ती है। उड़द या मसूर की दाल से भी परहेज करना चाहिए।
- मदिरा-मास के निषेध के अलावा बैंगन, फूल गोभी और मूली का भी कम सेवन करना चाहिए।

पौष माह में करें सूर्यदेव की पूजा

- रोज सुबह उठकर स्नान के बाद तांबे के लोटे से सूर्य को अर्घ्य दें।
- जल में रोली और लाल रंग के पुष्प जरूर डालें।
- जल चढ़ाते समय 'ऊं आदित्याय नमः' मंत्र का जाप करें।
- इस माह में गर्म कपड़े और अनाज का दान करें।
- इस माह में लाल रंग के वस्त्रों का प्रयोग करने से भाग्य में वृद्धि होती है।
- इस माह में नमक का सेवन कम या ना के बराबर करना चाहिए।
- चीनी की जगह गुड़ का सेवन करें।
- मेवे और स्निग्ध चीजों का प्रयोग करें।
- अजवायन, लौंग और अदरक का इस्तेमाल हितकारी है।
- इस महीने में ठंडे पानी का प्रयोग बिलकुल ना करें।
- बासी खाने से दूर रहें।